(गोरख पांडेय की कविता)

कैथर कला की औरतें

तीज–ब्रत रखतीं धान–पिसान करती थीं
ग़रीब की बीबी
गांव भर की भाभी होती थीं
कैथर कला की औरतें

गाली–मार ख़ून पीकर सहती थीं
काला अच्छर
भैंस बराबर समझती थीं
लाल पगड़ी देखकर घर में
छिप जाती थीं
चुड़ियां पहनती थीं
ओठ सीकर रहती थीं
कैथर कला की औरतें

जुल्म बढ़ रहा था
ग़रीब–गुरबा एकजुट हो रहे थे
बग़ावत की लहर आ गई थी
इसी बीच एक दिन
नक्सलियों की धर–पकड़ करने आई
पुलिस से भिड़ गईं
कैथर कला की औरतें
अरे, क्या हुआ? क्या हुआ?
इतनी सीधी थीं गऊ जैसी
इस क़दर अबला थीं
कैसे बंदूकें छीन लीं
पुलिस को भगा दिया कैसे?
क्या से क्या हो गईं
कैथर कला की औरतें?
यह तो बग़ावत है
राम–राम, घोर कलिजुग आ गया
औरत और लड़ाई?
उसी देश में जहां भरी सभा में
द्रोपदी का चीर खींच लिया गया
सारे महारथी चुप रहे
उसी देश में
मर्द की शान के ख़िलाफ़ यह जुर्रत?

खैर, यह जो अभी–अभी
कैथर कला में छोटा–सा महाभारत
लड़ा गया और जिसमें
ग़रीब मर्दों के कंधे से कंधा
मिला कर
लड़ी थीं कैथर कला की औरतें
इसे याद रखें
वे जो इतिहास को बदलना चाहते हैं
और वे भी
जो इसे पीछे मोड़ना चाहते हैं
इसे याद रखें
क्योंकि आने वाले समय में
जब किसी पर ज़ोर–ज़बरदस्ती नहीं
की जा सकेगी
और जब सब लोग आज़ाद होंगे
और खुशहाल
तब सम्मानित
किया जाएगा जिन्हें
स्वतंत्रता की ओर से
उनकी पहली क़तार में
होंगी
कैथर कला की औरतें।

पेज 1 का शेष

असीमानन्द से कौन डरता है

तीसरा, असीमानंद द्वारा भागवत और इन्द्रेश का खुलासा पूरी तरह स्वाभाविक नज़र आता है। इसके मुताबिक, 'जुलाई 2005' में सूरत में आर एस एस का सम्मेलन था। इसके बाद भागवत व इन्द्रेश कुमार डांग आये जो 2 घंटे का कार द्वारा सफ़र था। वहां नदी किनारे एक टेंट में सुनील जोशी ने उन्हें मुस्लिम ठिकानों को बम से निशाना बनाने की अपनी योजना बताई। भागवत ने कहा– स्वामी जी अगर आप यह करेंगे तो यह जुर्म नहीं माना जायेगा। बल्कि लोग इसे विचारधारा से जोड़ कर देखेंगे।

इन हालात में एन आई ए का सन्नाटा समझ में नहीं आता। जानकारों का कहना है कि एन आई ए का वर्तमान डी जी शरद कुमार किसी जमाने में भाजपा के केन्द्रीय मन्त्री प्रमोद महाजन का बहुत करीबी रहा है। उन दिनों शरद कुमार सी बी आई में होते थे और प्रमोद महाजन, वाजपेयी सरकार में सर्वाधिक शक्शाली मन्त्रियों में से एक था।

भारत रत्न: न देने वाले को 'भरम' न लेने वाले को 'शरम'

बस केवल अन्तरिक्ष को फतह करके ही देश का गौरव बढाया जा सकता है। यह वही देश है जिसमें भूखों, नंगों, लाचारों का बहुमत है। तेंदुलकर की ही तर्ज पर राव भी कोई ऐसी बात नहीं कहना चाहते जो शासकों को अप्रिय लगे। इसी लिये वे भी जनता के मुद्दों पर नहीं बोलते। क्योंकि जनता के किसी भी मुद्दे पर बोलने का अर्थ है ऐसी बात कहना जो तमाम शासकों के लिये समान रूप से अप्रिय सिद्ध होगी।

भारत रत्न के उन्य उम्मीदवारों को भी शासकों के इशारे समझ में आते हैं। अन्ना हज़ारे को ही लीजिये। काफ़ी दिनों से वे भी इस कतार में खड़े देखे जा सकते हैं। उनका देश के सामाजिक जीवन में योगदान भी तेंदुलकर या राव के मुकाबले बहुत अधिक कहा जायेगा। भ्रष्टाचार जैसे सर्वसाधारण को प्रभावित करने वाले मुद्दे को शासकों का भी मुद्दा बनाने में उनकी भूमिका कमाल की रही। भूख हड़ताल और जनआन्दोलन ने उन्हें भारतीय जनमानस का हीरो बना दिया। अब वे कांग्रेस व भाजपा के बनाये लोकपाल का गुण गाते दिखाई पड़ते हैं, बेशक भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई में एक इन्च ज़मीन भी तय न की गई हो।

इसी तरह का मामला हॉकी के जादूगर कहे जाने वाले ध्यान चन्द के शुभचिन्तकों का है। वे यह नहीं समझ पा रहे हैं कि कार्पोरेट इंडिया की जरूरत तेंदुलकर हैं न कि ध्यान चंद। वे ध्यान चंद के लिये मेरिट पर भारत रत्न मांग रहे हैं जबकि तेंदुलकर के हक में इसका फ़ैसला राजनैतिक/व्यवसायिक मुनाफ़े के आधार पर किया गया है। चन्द हॉकी से जुड़े खिलाड़ियों व प्रशंसकों की थकी–हारी आवाज को सुनने का समय न सरकारों के पास है और न ही मीडिया के पास।

हो सकता कल अन्ना हजारे और ध्यान चन्द को भी भारत रत्न दे दिये जायें। उन्हें ही क्यों, वाजपेयी, काशीराम, राम मनोहर लोहिया जैसों का भी नम्बर आ सकता है। पर यह होगा तभी जब इससे शासक वर्गों के अपने हित सधते हैं।

व्यर्थ नहीं जायेगी डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर की शहादत शहादत

–उमाशंकर सिंह

मानव सभ्यता के इतिहास में अंधविश्वास के खिलाफ़ और वैज्ञानिक चेतना के लिये लड़ने वालों की हत्या या उनके खिलाफ़ हिंसा कोई नयी बात नहीं है। हज़ारों वर्ष पहले वेद–पुराण की बखिया उधेड़ने वाले चार्वाक को इसी 'सभ्य धार्मिक समाज' ने जलाकर मार डाला था। गियोर्डानो ब्रूनो की हत्या इसलिये कर दी गयी थी क्योंकि उसने चर्च के आधिपत्य के दौर में एक बात कही जो चर्च की मान्यताओं के खिलाफ़ थी कि सूर्य पृथ्वी के नहीं, पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ़ चक्कर काटती है। कॉपरनिकस पर चर्च की टेढ़ी नजर की बात सब जानते हैं। गैलीलियो को तो चर्च ने आजीवन नजरबंद की सज़ा दी थी और उसी दौरान उनकी मृत्यु हुई या ये कहें कि चर्च के हाथों हत्या हुई। ईश निंदा और नास्तिकता के आरोप में ही सुकरात को जहर का प्लामा थमा दिया गया था। आज सब जानते हैं कि ब्रूनो, कॉपरनिकस, गैलीलियो और सुकरात सही थे। हालांकि इन सबके सामने चुप रहने और बच जाने का विकल्प था। यह श्रृंखला बहुत लंबी है और आज तक चली आ रही है।

पुणे में अंधविश्वास के खिलाफ़ लड़ने वाले डॉ. दाभोलकर की हत्या 'सभ्य धार्मिक समाज' की इसी हिंसा की एक कड़ी है। यह हत्या शाजिशन है और इसकी तुलना जमीन, दौलत या निजी दुश्मनी में की गयी हत्या से नहीं की जा सकती। हत्यारों में तमाम धर्म के ठेकेदारों की मिलीभगत हो सकती है। क्योंकि अंधविश्वास की दुकान सभी धर्मों के ठेकेदारों ने खोली हुई है। वे दाभोलकर को मार देना चाहते थे क्योंकि उनका जिंदा रहना हत्यारों और उनकी विचारों के अस्तित्व पर खतरा बन रहा था। मूर्तिबाजी में मेरा कोई यकीन नहीं है। इसके बावजूद मैं श्री दाभोलकर की पुणे में प्रतिमा बनाने और नीचे चबूतरे पर उनकी प्रमुख शिक्षाओं का उल्लेख करने की मांग करता हूं। वे उन्हें मारना चाहते हैं और हम उन्हें जिंदा रखना चाहते हैं। साथ ही सामाजिक कुप्रथाओं और अंधविश्वासों, जिसके शिकार सबसे अधिक महिलाएं और दलित–पिछड़े होते हैं, के विरुद्ध महाराष्ट्र विधानसभा में वो एक विधेयक पास कराने की कोशिश में थे। मैं उस विधेयक को भी अविलंब पारित करने की मांग करता हूं।

मोदी के सुगम कायान्तरण के लिए अदालती फ़ैसला

नरेन्द्र मोदी का पाखंडी चेहरा एक बार फ़िर उज़ागर हो गया। 2002 में गुजरात नरसंहार का रचयिता 2014 के लोकसभा चुनाव के पहले अपने कायान्तरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है। इस कायान्तरण की प्रक्रिया में उसने कई जतन किये। उपवास रखे, सद्भावना सभायें की और अब 2002 की घटना पर कह रहा है, ''मेरी अंतरात्मा ऐसी गहरी संवेदना से भर गयी थी, जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। दु:ख, पीड़ा, यातना, वेदना, व्यथा–ऐसे किसी शब्द से उन भावों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती थी। वो हृदय विदारक घटना थी, उस अमानवीय और दुर्भाग्यपूर्ण घटना को याद करके अब भी कंपकंपी छूट जाती है।''

ये बातें वह आदमी बोल रहा है जिसके मंत्रिमण्डल के सबसे बड़ी मंत्रियों में एक माया कोडनानी दंगों पर सुनाये अदालती फैसले के बाद 28 सालों के लिये जेल में बंद है। मोदी का दाहिना हाथ बाबू बजरंगी जेल में बंद है। ये बातें वह आदमी बोल रहा है जो गोधरा में मारे गये लाग़ों की लाशों को पूरे गुजरात में घुमा–घुमाकर साम्प्रदायिक उन्माद फैला रहा था। वह आदमी बोल रहा है जो उस वक्त 'क्रिया–प्रतिक्रिया का सिद्धान्त' दे रहा था। वह आदमी बोल रहा है जो कह रहा था कार के नीचे कुत्ते के पिल्ले के मरने पर भी दु:ख होता है। वह आदमी बोल रहा है जो किसी मुस्लिम को अपने राज्य में हुए विधानसभा चुनाव में एक सीट भी नहीं देता है। वह आदमी बोल रहा है जिसे

गुजरात नरसंहार के समय उसी की पार्टी के प्रधानमंत्री ने राजधर्म अपनाने की सलाह दी थी। वह आदमी बोल रहा है जिस पर भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने टिप्पणी की थी 'जब रोम जल रहा था तब नीरो बंशी बजा रहा था'।

कैसर बानो, बिलकिस बानो, सईदा जाफ़री जैसी स्त्रियों से जाकर नरेन्द्र मोदी को पूछना चाहिए कि असहनीय पीड़ा क्या होती है ? नरेन्द्र मोदी के लिए तो असहनीय पीड़ा केवल जुबानी खेल है।

अपने कायान्तरण के लिये बेताब मोदी को एक स्थानीय अदालत क्लीन चिट क्या दे देती है, वह एक से बढ़कर एक शेखी बधारने लगते हैं। हर कोई जानता है कि अदालतें और खासकर स्थानीय अदालतें जिनमें हर कहीं राज्य सरकार का दखल होता है कैसे काम करती हैं। जज की नियुक्ति से लेकर वकील की जिरह तक सब प्रायोजित होती है। यह तो खुद को ही क्लीन चिट देना सरीखा है। और इसके लिए न्याय और अदालत का खेल खेलने की भी क्या जरूरत है।

मोदी 'सत्यमेव जयते' की कितनी भी दुहाई दे यह सच है कि यह नरसंहार मोदी के नेतृत्व में संघ और उसके अनुषंगी संगठनों के द्वारा प्रायोजित व नियोजित था। माया कोडनानी, बाबू बजरंगी जैसे प्रत्यक्षत: इसको नेतृत्व दे रहे थे जो मोदी, अमित शाह जैसे मुख्यमंत्री कार्यालय में बैठकर निर्देश दे रहे थे। हिन्दी फ़िल्मों का डायलॉग है–'कानून सबूत मांगता है'। मोदी ने इतने सूक्ष्म ढंग से इस नरसंहार को रचा था कि उसमें सबूत की कोई गुंजायश ही नहीं थी। कई वर्षों बाद जांच करने पर कोई एस.आई.टी. कैसे व क्यों मोदी के ख़िलाफ़ सबूत ढूंढ पाती।

मोदी अपने कायान्तरण के लिये जितने व्यग्र और प्रयत्नों में लगे हैं उससे कम इस काम में उनके प्रधानमंत्री पद के प्रस्तोता भी नहीं लगे हुए हैं। भारत के एकाधिकारी घराने उनके द्वारा संचालित मीडिया अपनी इस इच्छा को कई बार व्यक्त कर चुके हैं कि वे मोदी को भारत का प्रधानमंत्री बनाना चाहता है। उसका कायान्तरण इन्हीं के द्वारा प्रायोजित व नियोजित है। कायान्तरण नाम से अनुवादित मशहूर उपन्यास में एक आदमी कॉकरोच में तब्दील हो जाता है। यहां इस प्रायोजित कहानी में एक कॉकरोच मसीहा बनना चाहता है। भारत का भाग्य विधाता बनना चाहता है।

–नागरिक